Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

June-2020, Volume : 07, Issue : 01, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

योगनिष्ठ प.पू. आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के
९५वें स्वर्गवास दिन के उपलक्ष्य में कोटि-कोटि वंदन.

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

प. पू. आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी म.सा. के
३६वें स्वर्गारोहण दिन के उपलक्ष्य में कोटि-कोटि वंदन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-१, कुल अंक-७३, जून-२०२०

Year-7, Issue-1, Total Issue-73, June-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖
हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖
रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖
गजेन्द्रभाई शाह

❖ संपादन सहयोगी ❖

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जून, २०२०, वि. सं. २०७६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-१०

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	६
३.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
४.	२ अप्रगट मध्यकालीन बारमासा	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	१०
५.	उपधान सज्झाय	हिरेनाबेन अजमेरा	१७
६.	नवतत्त्व स्तवन	उपेन्द्र डी. भट्ट	२१
७.	कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह	पुण्यविजयजी	२६
८.	प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि	राहुल आर. त्रिवेदी	३०
९.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमंतकुमार	३२
१०.	समाचार सार	-	३४

भमरा दूतर दीहडा, सही आपण सरीर।
जब लगि पाडल मउरिइ, तब लगि बइस करीर ॥६८॥

प्रत क्र. १३१०७१

भावार्थ- हे भ्रमर ! बुरे दिन तू अपने शरीर पर सहन कर ले, जब तक गुलाब खिल नहीं जाता तब तक करीर पर बैठकर समय बिता ले। अर्थात् बुरे समय में धैर्य रखना चाहिए।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का यह नवीन अंक आपके करकमलों में समर्पित करते हुए हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी के अतिरिक्त चार अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **“गुरुवाणी”** शीर्षक के अन्तर्गत जैनदर्शन के विराट वर्तुल में अन्य धर्मों की अपेक्षा जैन धर्म की विशिष्टता दर्शाने का प्रयास किया गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक ‘**Awakening**’ से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें गुरुमन्त्र, दक्षिणा तथा मन की शक्ति के विषय में दृष्टान्त देते हुए समझाया गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा संपादित दो बारमासा कृति का प्रकाशन किया गया है – **१. विजयधर्मसूरि बारमासा,** इसके अन्तर्गत आचार्य विजयधर्मसूरि के आध्यात्मिक व बाह्य गुणों का वर्णन किया गया है तथा **२. तेजसिंह आचार्य का बारमासा** के अन्तर्गत आचार्य तेजसिंह के जीवन से सम्बन्धित मुख्य घटनाओं का वर्णन किया गया है। तृतीय कृति के रूप में शहरशाखा पालडी में कार्यरत श्रीमती हिरेनाबेन अजमेरा के द्वारा सम्पादित **“उपधान सज्झाय”** प्रकाशित किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता जयसौभाग्य ने मानवभव को सफल करने हेतु किए जानेवाले उपधानतप की महिमा का वर्णन किया है। चतुर्थ कृति के रूप में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा में कार्यरत पंडित श्री उपेन्द्र भट्ट के द्वारा सम्पादित **“नवतत्त्व स्तवन”** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता श्री लक्ष्मीकीर्ति ने जीव-अजीव, पुण्य-पाप आदि नौ तत्त्वों का वर्णन किया है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के अन्तर्गत पूज्य मुनि श्री पुण्यविजयजी लिखित **“कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह”** लेख का आगे का भाग श्रावक हीरालाल देवचंद शाह द्वारा सन् १९४१ में प्रकाशित श्री ‘चंद्रमहत्तराचार्य विरचित पंचसंग्रह’ नामक पुस्तक के आमुख से साभार प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें भारतीय दर्शन तथा जैनदर्शन में कर्मवाद विषयक साहित्यों का महत्त्व व उससे सम्बन्धित विद्वानों की भूमिका के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

गतांक से जारी **“पाण्डुलिपि संरक्षण विधि”** शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञानमंदिर के पं. श्री राहुलभाई त्रिवेदी के द्वारा बिना केमिकलो के पाण्डुलिपियों की सफाई कैसे कि जाती है, इस मेकेनिकल क्लिनिंग के बारे में जानकारी दी गई है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत इस अंक में श्रीविमलसूरिजी द्वारा रचित **“त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र”** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ में ६३ महापुरुषों में से श्री मल्लिनाथ तक के चरित्र का वर्णन सरल एवं संक्षिप्त रूप से किया गया है।

हम यह आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

जैनदर्शननुं बाह्याभ्यन्तर स्वरूप अनवबोधनाराओ जैनदर्शनी महत्ता आंकी शकवा समर्थ थई शकता नथी। केटलाक कुलाचारे रूढिथी जैनधर्मी गणाता जैनो जैनदर्शननी सापेक्षाओ अवबोधी शकता नथी, तेथी तेओ वस्तुतः जैनधर्मनी आराधनाथी विमुख रहे छे अने तेथी तेओ आत्माना गुणोनी उत्क्रान्तिना मार्गे आत्मवीर्य स्फोरवीने स्वयं वहवा तथा अन्योने वहावववा समर्थ थइ शकता नथी। जे भव्य मनुष्यो ज्ञाननी तीक्ष्णताए अने वैराग्यनी तीक्ष्णताए मध्यस्थभावे रहीने जैनदर्शननी उपयोगिता संबंधी विचार करे छे, तेओ रागादिना नाशपूर्वक मुक्तिप्रद जैनधर्म छे एम अवबोधवा सद्गुरू कृपाथी समर्थ थइ शके छे।

एकेकनयनी अपेक्षाए एकान्तवादे उत्थित धर्मो ए व्यष्ठिरूप धर्मो छे, अने सर्वनयोनी परस्पर सापेक्षता धारण करीने सर्व धर्मोने पोतानामां समावनार एवो जैनधर्म ए खरेखर विश्वव्यापक समष्टिधर्म छे। एम अपेक्षाए अवबोधाय छे। राग, द्वेष, मोह, मत्सर, शोक, पक्षपात, आदि दोषोनी जेम जेम क्षीणता थती जाय छे तेम तेम अनेकान्तज्ञान प्रकाशे छे।

जैनधर्म ए सर्वधर्मनो समष्टिधर्म छे, एम अनुभव अंशे अंशे प्रकटतो जाय छे। विश्वव्यापक जैनधर्मना विचारोनी विशालता आकाशनी पेठे अपरिमित छे। तेने अज्ञ मनुष्यो समज्या विना पोतानी वृत्तिना अनुसारे परिमित करी शके अर्थात् स्ववृत्तिना अनुसारे विचारो अने आचारोना लघु वर्तुलमां जैन धर्मने समावी दे तो तेमां ते मनुष्योनी भूल अवबोधवी। स्याद्वाद तत्त्वदृष्टिए अनेकनयोनो परिपूर्ण अभ्यास करनारा मध्यस्थज्ञानिमुनिवरो जैनधर्मनुं अनन्ततारूप वर्तुल के जेमां सर्वधर्मनां वर्तुलोनो समावेश थाय छे, तेने समजाववाने शक्तिमान् थाय छे।

अनन्त ज्ञान वर्तुलमां सर्वधर्म ज्ञान वर्तुलोने समावनार एवा जैन धर्मने द्रव्यानुयोगना शास्त्रोद्वारा सर्व विश्वमां प्रसरावबा प्रयत्न करवो जोइए। सर्वनयोनी सापेक्षवाळा जैनधर्मना ज्ञानथी धर्मना नामे विश्वमां रक्तनी नदीओ वहेती नथी। पोतानाथी न्हाना जीवोनो पण आत्मसमान मानवानुं ते शिखवे छे। पोतानाथी मोटा जीवोनी भक्ति करवानी प्रवृत्ति शीखवे छे। सर्व विश्व प्राणीओने मित्रभावे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवलोकवानुं कार्य जैनधर्म शिखवे छे। रागद्वेषादि दोषोने मारी हठावीने सत्योन्नति करवानी दिशा खरेखर जैनधर्म देखाडे छे।

कोइपण मत पन्थ सम्प्रदाय उपर पण ते मत वा वगेरेने धारण करनार मनुष्यपर साम्यभाव, मैत्रीभाव, करूणाभाव धारण करवानुं जैनधर्म शिक्षण आपे छे। सर्व जीवोना श्रेयः अर्थे परोपकार करवानुं शिक्षण आपनार जैनधर्म छे। सत्य स्वातंत्र्य अने सत्य पारतंत्र्यनुं शिक्षण आपनार जैनधर्म छे। अशांति, युद्ध, हिंसा वगेरेने हठावीने सर्वत्र सर्व देशमां सर्वथा, सर्वदा शांति अने दयानो फेलावो करनार जैनधर्म छे।

श्रीवीतराग महावीर प्रभुए जैनधर्मनां उदार तत्त्वो समस्त विश्व मनुष्योने जाहेर कर्यां छे। तेनो लाभ आपवाने विश्वमां जैन महात्माओए उदार सर्वनय सापेक्ष दृष्टिथी उपदेशादिवडे प्रवृत्त थवुं जोइए।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६८४-६८५

श्रुतसागर के इस अंक के माध्यम से प. पू. गुरुभगवन्तों तथा अप्रकाशित कृतियों के ऊपर संशोधन, सम्पादन करनेवाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि आप जिस अप्रकाशित कृति का संशोधन, सम्पादन कर रहे हैं अथवा किसी महत्त्वपूर्ण कृति का नवसर्जन कर रहे हैं, तो कृपया उसकी सूचना हमें भिजवाएँ, जिसे हम अपने अंक के माध्यम से अन्य विद्वानों तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे, जिससे समाज को यह ज्ञात हो सके कि किस कृति का सम्पादनकार्य कौन से विद्वान कर रहे हैं? इस तरह अन्य विद्वानों के श्रम व समय की बचत होगी और उसका उपयोग वे अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियों के सम्पादन में कर सकेंगे.

निवेदक

सम्पादक (श्रुतसागर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

Dharma means right action or duty. It is intelligence that determines our Dharma or right conduct. Only it can help us to free ourselves from meaningless traditions and blind beliefs. Only intelligence can direct men on the right path when they are wandering about in confusion, having lost their way. Only intelligence can inspire in us the courage with which we can get rid of our mental weakness. When we are in difficulties and adversities it is our intelligence that helps us to find a way out of them.

A wicked man aimed his pistol at a young man who was sitting near the window of the seventh storey of a palatial building and commanded him: “Jump down from here, or I will shoot you.” If the young man had been perturbed and dazed at this moment of difficulty he should have died by jumping down from that height. But he used his intelligence and found a solution.

Smiling, the young man said, “Dear brother! All can jump to the ground from a high place; there is nothing great in it. I can leap to this place from the ground. I am an expert in high jump”. The wicked man said, “Very good. Do so. Let me see.”

On hearing this leaving the wicked man there, the young man came out of the room. The wicked man thought that he was going down to display his skill in jumping high. But the young man soon after coming out, shut the door and locked it. He rang up the police and handed over the wicked man to the police. In this manner, he was successful in saving his lite by using his intelligence.

The second means is the body. The body is mortal and per-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ishable. It is susceptible to change and it keeps changing. It is devoid of any lasting value or significance and is the abode of ailments. We should use the body or our physical potentialities to render service to others. The service we render with our body is another form of tapasya or penance. If a wicked man who is physically strong is beating a weak man, using our physical strength we can save the weak man. This is the right use of the body.

The third means is the mind. It has the power of reflection and assimilation. A Western philosopher has said "Take a quick decision but before taking such a decision think well taking enough time". The mind performs the actions of thinking and reflection. It is the intelligence that takes a decision. It is like the judge giving his decision, Like lawyers the mind argues within itself on both the sides of a problem. The mind gets drawn towards senses and passions; hence holy man train it and keep it under control. Kabirdas says that the right use of the mind is that it should draw us towards God and salvation.

In one of his fine poems, he says, "How can the garlands of beads made of wooden pieces give you knowledge? If our mind cannot turn towards God how can the garland of beads make us turn towards God? Even though we spend ages turning the garland the instability and fickleness of our mind does not end. If we try to achieve with our hands what we should achieve with our minds, the minds keep ranging as they like.

The ancient exponents of ethical doctrines say,

मन एव मनुष्याणाम् कारणं बन्धमोक्षयोः ।।

Mana eva Manushyanam

Karanam bandhamokshayoh

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ अप्रगट मध्यकालीन बारमासा

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

रास, चौपाइ, छंद, फागु, पवाडो विगेरे काव्य प्रकारोनी जेम “बारमासा” पण गुर्जर साहित्यनो एक प्रकार छे। आ काव्य प्रकारमां १२ महिनाओने केंद्रमां राखी काव्यनी रचना कराय छे। तेमां’ य विशेषे जे-ते महिनाओमां (ऋतुओना सांयुज्यथी) उत्पन्न थती उर्मीओनी वर्णनानुं अहीं आलेखन थाय छे। क्यारेक वळी तेनी साथे ते-ते महिनामां उजवाता तहेवारोनी वर्णना द्वारा पण काव्यने रोचक बनावाय छे।

प्रस्तुत लेखमां आपणे तेवी ज ‘बारमासा’ संज्ञक २ रचनाओनो परिचय जोइशुं।

(१) विजयधर्मसूरि बारमासा

प्रस्तुत बारमासा विजयधर्मसूरिजीना गुणवैभवनुं वर्णन करती लघु रचना छे। अहीं कवि वडे गुरुभगवंतना आभ्यंतर तथा बाह्य वैभवनी बार मासाना वर्णन साथे तुलना कराई छे। तेमां’ य खास करी चैत्र मासनी, जेठमासनी तथा भादरवा मासनी वर्णना साथे करायेल गुरुगुणनी तुलनाना पद्यो तो विशेषे सुंदर छे। वळी अहीं “आव्यो मृगसिर मास...” ए पद्यमां मागसर महिनानी वद पांचमे विजयधर्मसूरिजीने उदयपुरमां गच्छराज पद अपायानी विगत पण विशेष नोंधनीय छे।

(२) तेजसिंह आचार्यना बारमासा

प्रस्तुत कृति लोंकागच्छना केशवजी ऋषिना शिष्य तेजसिंहजी आचार्यना जीवनचरित्रनुं वर्णन करती ३ ढाळनी रचना छे। अहीं कविए आ. तेजसिंहजीना प्रारंभिक जीवनचरित्रनी गुंथणी करता प्रथम ढाळमां तेमना गामनुं, माता-पितानुं, विद्याध्ययननुं तेमज वैराग्य प्राप्तिनुं स्वरूप वर्णव्युं छे। (अहीं कविए आ. तेजसिंहजीना गृहस्थपणानुं नाम नोंध्युं नथी।) ज्यारे काव्यनी बीजी ढाळमां माता-पुत्र वच्चे संयम ग्रहण करवा अंगे परस्पर कराती दलीलोनी वर्णना करी छे। अहीं एक बाजु माता वडे जे-ते महिनामां ऋतु सहज गृहस्थ जीवनना सुखनुं वर्णन करता, संयम जीवनना दुःखो वर्णवाया छे, तो बीजी बाजु पुत्र (तेजसिंहजी) वडे ते-ते अनुकूळता अंते कइ रीते दुःखमां परिणमी छे तेनुं वर्णन करी पोतानी दृढ संयमाभिलाषा व्यक्त कराइ छे। छेल्ले ढाळांतमां कवि पुत्र(-पुत्री?)ने संयमनी अनुमति आपती मातानी तथा केशव ऋषि पासे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीक्षित थइ विद्याध्ययनादि करता तेजसिंहनी विगतो आलेखी ढाळनुं समापन करे छे।

कृतिनी अंत्य ढाळ ऋषिगुण वर्णनानी छे, खास तो आ ढाळमां कवि वडे आलेखायेली "सूरतमां वोरा वीरजी वडे तेजसिंहजीना पद महोत्सव करायानी" तेमज "ऋषि भीमजीना शिष्य वसु मुनि वडे खंभातमां सं. १७३४ ना वर्षे बाई प्रेमबाईनी विनंतीथी प्रस्तुत कृति रच्यानी" नोंध विशेषे उल्लेखनीय छे।

कवि परिचय-

उपरोक्त बन्ने रचनाओ अनुक्रमे जैनेंद्र तथा वसु मुनि नामना कविओनी रचना छे। तेमना जीवन चरित्र विशे के अन्य ग्रंथो विशे कशो उल्लेख मळतो नथी। परंतु कृतिना संदर्भे ते बन्ने कविओ मुनिओ होवानी वात स्पष्ट छे।

प्रान्ते संपादनार्थे बन्ने कृतिओनी हस्तप्रत जेरोक्ष आपवा बदल अनुक्रमे नेमि-विज्ञान-कस्तुरसूरिज्ञानमंदिर(सुरत)ना व्यवस्थापकश्रीनो खूब खूब आभार।

जैनेंद्र मुनि कृत

विजयधर्मसूरि बारमासो

॥ढाल॥ श्रावण मासे स्वामी मेली चाल्यो रे - ए देशी॥

श्रीश्रुतदेवी मात सुमति वधारो रे, श्रीगुरुना गुण गातां हि वचन सुधारो रे।
श्रीविजयधर्मसूरिंदतपगच्छराया रे, चढती दोलत जास सुजस सवाया रे ॥१॥

चैत्रे तरु सहकार मंजरी निकसै[१] रे, सुंदर लाल गुलाब वाडी विकसै रे।
गुरुगुण-नंदनवन कुसुमै लहकै रे, जेहनो परिमलपूर जगमां महकै रे ॥२॥

वैशाखे आखात्रीज पर्व कहावै रे, घर घर मीठा अन्न सहु जन खावै रे।
नीत नीत आखात्रीज जिहां गच्छराजा रे, विचरे ते दिस धन्न अन्न धन झाझा[२] रे ॥३॥

जेठे वासर[३] जेठ रयणी छोटी रे, तावड[४] लूह[५] अथाह[६] ए रित खोटी रे।
तिणमें धर्मसूरिंद कोई वंदावे रे, पापताप संताप सब मीट जावै रे ॥४॥

आसाढे जलधार धारा वरसे रे, भरीया सरोवर नीरपाले फरसे रे।
ईण रित[७] में गुरुराय राज्य पधारो रे, अवधारी चौमास जनम सुधारो रे ॥५॥

श्रावणीयानी त्रीज श्रावण मासे रे, वली राखडली पर्व सहुअ प्रसंसे रे।
एदोइ लोकिकपर्व लोके भणीइं रे, पिण लोकोत्तरपर्व गुरुगुण थुणीइं रे ॥६॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाद्रव मासे पूर नदीये हाले[८] रे, प्रथवी नीले रंग करसणी[९] माले रे।
गुरुनी पिण जस-कीर्ति-नदीइं(यां?) पसरी रे, ते पोहती समुद्रां तीर ईहांथी नीसरी रे ।।७।।

आसो पूनमचंद निस अजुआली रे, पिण तेह छे सकलंक विरहीने बाले रे।
गुरुनो पिण मुखचंद पूरण प्रकासे रे, अंक[१०] वंक[११] नीकलंक दुरित प्रणासे रे ।।८।।

कातीइं[१२]ईक दिन पर्व दीवाली रे, जिम[इ] जन पकवांन सेव सुंआ(हा)ली[१३] रे।
चौमासु गुरुराय पावन करता रे, नीत दीवाली तेय ओछव वधता रे ।।९।।

आव्यो मृगसिर मास सही अवधारो रे, वदि पंचमीने दिन मंगल गावो रे।
वखतबली[१४] गछराज तखत बिराज्या रे, सहर उदैपुरमांहि वाजा वाज्या रे ।।१०।।

पोसै पासनु चैत्य श्रीगुरु वंदो रे, वदि दसमीने दिन मन आणंदो रे।
गाम गामना संघ वीनती आवे रे, जेहनो पूरण पुन्य तिहां वंदावै रे ।।११।।

माहै महिला अग्नि सहू जन सेवै रे, ऐ बेहूथी मुनिराज दूरे रह(रे?)वै रे।
सूरिगुण छत्रीस(से) गछपति गाजै रे, जुगपरधांन बिरुद जेहनो छाजै रे ।।१२।।

फागुण मासे फाग सहूजन खेले रे, वली हुतासनी पर्वख्याल खूस्याले रे।
गुरु पिण ज्ञानगुलाल-ख्याले[१५] खेले रे, होरी मोह मिथ्यात दूरे ठेले रे ।।१३।।

बोल्या बारे मास ईणपरे सारा रे, गुंथी कुसुम सुवर्णरंग रसाला रे।
श्रीविजैधर्मसुरींद तपगछ-दीवो रे, इम जैनेंद्र दीए आसीस गुरु चिरंजीवो रे ।।१४।।

।। इति गुरु बारेमास सम्पूर्णम् ।।

शब्दकोश

१) उत्पन्न थाय, २)घणा, ३)दिवस, ४)ताप, ५)लू, ६)घणी, ७)ऋतुमां, ८) चाले, ९)खेडूत, १०)चिह्न, ११)अद्भूत, १२)कार्तिक मास, १३)पूरी, १४)भाग्यशाळी, १५) क्रीडामां.

वसु मुनि कृत

तेजसिंह आचार्यना बारमासा

।।ॐ।। श्री गुरुभ्यो नमः ।।

श्रीजिन पारस प्रणमीयइ, त्रेवीसमो जिणिंद।
गुण गासु श्रीगुरु तणा, श्रीतेजसिंघ मुणिंद ।।१।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल- अवलबेलानी ॥

एहि ज जंबूद्वीपमइं रे लाल, भरथखेत्र अभिराम सुखकारी रे।
मरुधरदेश मनोहरु रे लाल, पंचेटीउपुर ठाम सुखकारी रे ॥२॥

गुणनिधि गच्छपति सेवीए* रे लाल, जिम लहीए मंगलमाल सुखकारी रे।
दर्शन जेहनो सुंदरु रे लाल, वाणी अधिक रसाल सुखकारी रे ॥३॥ गुण...

साह लखमण तिहां वसइ रे लाल, लखमादे तस नार सुखकारी रे।
तास कूखइ आवी उपनो रे लाल, पुन्यवंत प्राणी सार सुखकारी रे ॥४॥ गुण...

शुभ सुपनइ सुत जाइयो[१] रे लाल, जन्म्यो कुंवर कुलचंद* सुखकारी रे।
गावइ रंग वधामणां रे लाल, हरख्या सज्जनजन-वृंद सुखकारी रे ॥५॥ गुण...

अनुक्रमे प्रो(पो)ढा[२] थया रे लाल, भणी गुणी निसाली सुखकारी रे।
वाणी सुणी सदगुरु तणी रे लाल, सूत्र-सिद्धांति सुविशाल सुखकारी रे ॥६॥ गुण...

वचन सुणी वैरागीयो रे लाल, ए संसार असार सुखकारी रे।
मात तातनइ वीनवइ रे लाल, लेसुं संयमभार सुखकारी रे ॥७॥ गुण...

मात कहे ते सांभलो रे लाल, मन धरी अधिक उल्हास सुखकारी रे।
चित्त धरी सुणयो सहु रे लाल, गुरुगुणना बारमास सुखकारी रे ॥८॥ गुण...

॥ ढाल ॥ गिरधर ओवइगो(?) - ए देशी ॥

मृगशिर मासि रलीयामणो, घर घर मंगल सार,
मोटइ मंडाणि परणाविस्युं, सुंदरी सुकुलिनी नार,
सुख भोगवी संसारना, पछी लेयो संजमभार ॥१॥

मोरा कुंयरजी इम किम थाए रीगो[३],
संयम विषम अपार, मोरा प्राण आधार, कुल तणा सिणगार ॥२॥ (आंकणी)

सुख बहुला मिं भोगव्या, सुरनरना अनेक,
पण त्रिपतो जीव नवि हुउ, मनमां आणो विवेक,
हवइ गुरुनी वाणी सुणी, नवि राचुं तिल[४] एक ॥३॥मोरा...

पोस मासे पुन्यथी, भोजन विविध वखांणि,

---

*अहीं आ ज प्रतमां "गाईइ" एवो बीजो पाठ पण मळे छे , * "कुलचंद" एवुं नाम होई शके खरुं?

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊन्हा अन्न आरोगीयइ, सर्करा-पय पाणि,
तेणि दिन साधुनइ दोहिली, मधुकरीवृत्ति जाणि ॥४॥मोरा...

मेर[५] सायरथी अधिक, अन्न पान आहार,
सरस निरस मिं भोगव्या, कहता नावइ पार,
हवइ संयम आदरुं, जिम पामुं सुख सार ॥५॥मोरा...

माहमासे अति भला, मोटा महेल सुचंग,
कसमसती[६] कबायसु[७], ताढि न लागि अंग,
परिसहो सहवा साधुने, ते शीतादि मनरंग ॥६॥मोरा...

दुख्य(क्ख) घणा ए जीवि सह्या, भव भमता संसार,
नरक तिर्यंच तणे भवे, ते जाणे किरतार,
निर्जरा हेति जे सहइ, ते नमुं वारोवार ॥७॥मोरा...

फागुण वाजे[८] वायरो, भोगी केलि करंत,
चोआ[९] चंदन छांटणा, कपूर केसर मनखंत,
मृदंग वीणा तालसुं, गावइ राग वसंत ॥८॥मोरा...

नाटिक अनेक नचाविया, कीधा बहुला रुप,
वैरागरसे हवे रमुं, चोखे चारित्र मनचूप[१०],
जिनवर-आण सदा धरुं, जिम न पडुं भवकूप ॥९॥मोरा...

चैत्र चतुर जांणी करी, मोरीया वनराय,
कोकिल(ली) कलरव करे, आंब तणे सुपसाय,
तेणे समे श्रीसाधने, राखेवो मन ठाय[११] ॥१०॥मोरा...

सीलसन्नाह[१२] पहेरी करी, खडग खिमा कर साहि[१३],
मोह-भडने जीपसुं,दोहिलो जे जगमांहि,
कर्म सबलो सहु कहे, मोहनीकर्म प्रांहि ॥११॥मोरा...

वैशाखइ सर्व जीव वांछे,सीतल सखरो[१४] ठाम,
आछा ते कपडा पहेरीए, जे लहइ बहुला दाम,
बावनाचंदन अर्चीइ, ते साधुने नही काम ॥१२॥मोरा...

ताप तडका जे सह्या, ते केता कहवाय,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरक तिर्यंच ए गतिमां, दुख्य(क्ख) घणा सहाय,
संवेगरस सही छांटतां, तनु सीतल थाय ॥१३॥मोरा...

॥ वरसा दिवसानी होली प्राहुणी-एढाल ॥

जेष्ठ मास तपे घणुं रे, आभलां-छायो[१५] आकास हो।
पंखी पण माला करे रे, पंथी वांछइ निज वास हो ॥१॥

मोहन कुंयर सुंदर माहरा रे, तुम्हे छो कुलआधार हो।
दिख्या छे वच्छ दोहिली रे, हजी छो बालकुंमार हो ॥२॥मोहन...(आंकणी)

ठांमि अनेक जीवे वासीया रे, गत्यागति संसार हो।
हवइ श्रीकेशवगुरु पामीया रे, टालुं दुख्य(क्ख)विकार हो ॥३॥मोहन...

आषाढि अंबर गाजीयो रे, वरसे जब जलधार हो।
मोरा मन हरषित थया रे, बापीउ पीउ पीउ पुकार हो ॥४॥मोहन...

सदगुरुवांणी-जलधरु रे, जे दुख्य(क्ख) टालणहार हो।
भव्य-मोरा भल भावे सुणे रे, ते पामे सुख श्रीकार हो ॥५॥मोहन...

श्रावण वरसे सरवडे[१६] रे, तीहां झाकल वाजे वाय हो।
तिण ऋति(तु)इं तीखा तमतमा रे, भोजन करो मनभाय[१७] हो ॥६॥मोहन...

वर्षा कालिंइ रुडा साधुजी रे, आश्रव रुंधइ जेह हो।
निरवद्य जीवी जेहनी रे, धन्य संसारे तेह हो ॥७॥मोहन...

भाद्रवमास भल आवीउ रे, पर्व पजूसण सार हो।
वित्त लहीने वच्छ भोगवो रे, भरो ते पुन्यभंडार हो ॥८॥मोहन...

दया-दान[१८] देउ जीवनइं रे, सदा पजूसण सार हो।
तत्वज्ञान भोजन भलो रे, एही अमृत अवधार हो ॥९॥मोहन...

आसो मासे नव नवा पहेरीए रे, वस्त्र भूषण सुखदाय हो।
घरि घरि दीपोच्छव हुए रे, वली बहिन-बीज कहेवाय हो ॥१०॥मोहन...

पंच महाव्रत सूध आराधीए रे, दश विध यतिनो धर्म हो।
मंगल कारण जगमां सही रे, धर्मनो एहि ज मर्म हो ॥११॥मोहन...

कार्तिकमास मन भाइउ[१९] रे, अनुमति द्यइ माय तास हो,
भाइ बहिन सहु मिली रे, कुंमर फली सब आस हो ॥१२॥मोहन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महामंडाणि[२०] दीक्षा दीए रे, श्रीकेशवजी कृपाल हो।
विनय करी गुरु सेवीया रे, शास्त्र भण्या सुविशाल हो ॥१३॥मोहन...

॥ ढाल-भासनी ॥

वडा श्रावक वोरावीरजी, सूरतनगरि मझारजी रे।
पुन्यवंत पद-महोच्छव करे, जाणी गुणना धारजी रे ॥१॥

भविजन सेवो रे श्रीगुरु तेजसी, सर्व जीवने सुखकारजी रे।
श्रीकेशवजी पाटि प्रतपो, जब लगि शशि-दिनकारजी[२१] रे ॥२॥
भविजन...(आंकणी)

ज्ञानदिवाकर जाणीइए, बुद्धि[इं] अभयकुंमारजी रे।
सुमति गुपति सूधी धरे, वाणी वदइ सुखकारीजी रे ॥३॥भविजन...

चिरंजीवी होज्यो गछपति, कविजन दे आसीसजी रे।
मनमनोरथ पूरो सर्वना, संघ सहु जगीसजी रे ॥४॥भविजन...

ऋषि भीमजी शिष्य इम भणइ, वसुमुनि सुख सारजी रे।
बाई प्रेमबाईनी वीनती, कीधा मास ए बारजी रे ॥४॥भविजन...

कलसलो

श्रीपूज्य श्रीपतिपाटि दिनकर, गणी श्रीतेजसींह ए।
गुरुगुण गावुं बहु सुख पावुं, नामि सदा अबीह[२२] ए ॥१॥
संवत् संतर चउती(वी?)सा १७३(२?)४ वर्षे, वदि सातम काती मास ए।
त्रंबावतीए गुरुगुण गाया, सेवकजन(नि?) उल्हासइ ए ॥२॥

इति

शब्दकोश

१) उत्त्पन्न थयो, २) मोटा, ३) हठीलो, ४) तल मात्र, ५) मेरु, ६) कसकसतु, तंग, ७) झब्भो, ८) वाय, ९) एक सुगंधी द्रव्य, १०) मननो उत्साह,११) ठेकाणे, १२) बखतर, १३) पकडी, १४) सुंदर, १५) ताराथी ढंकायेलु, १६)?, १७) मनगमता, १८) अभयदान ?, १९) गम्यु, २०) मोटा महोत्सवपूर्वक, २१) चंद्र-सूर्य, २२) निर्भय.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयसौभाग्य कृत

उपधान सज्झाय

हिरेनाबेन अजमेरा

प्रस्तुत कृति उपधाननो महिमा समजावती मारुगुर्जर भाषामां श्री जयसौभाग्य मुनि द्वारा रचायेली छे। उपधान तप एटले पौषधव्रतनी झलक, ४७ दिवसनुं साधुजीवन, जिनाज्ञा पालननो अद्भुत आनंद, गुरुभगवंतनी निश्रामां रहेवानो सोनेरी अवसर, अहम् भावनो त्याग अने अहोभाव तरफ प्रयाण, विनय अने बहुमानपूर्वक ज्ञान धारण करवानी प्रक्रिया, ज्यां क्षण क्षण देवनो सहवास मळे, पल पल गुरुनो आवास मळे अने समय समय पर संयम जीवननी सुवास मळे एने ज उपधान तप कहेवाय छे। उपधान तप करवाथी हृदय निर्मल थाय छे अने मोक्षमाला पहेरवाथी जीवन सफळ थाय छे।

कृति परिचय

आ कृतिमां आदरपूर्वक उपधान करी दुर्लभ एवा मनुष्यभवने सफळ करवानो मार्ग दर्शावेल छे। शुभ कुल-क्षेत्र-गुरुनो संयोग पामी शुभ रुचि राखीने सावधान रही उपधान करवानुं सूचवेल छे। तपनी वाचना, उपवास, नीवी, आंबिल, क्रिया आदि युक्त आराधना भवने उज्ज्वळ करे छे।

आदरपूर्वक यथाशक्ति जिनभक्ति करी उपधानमाला पहेरवी, उदारतापूर्वक सात क्षेत्रमां दान, जीर्ण प्रासादोनो उद्धार तेमज ज्ञानभंडार अने पुस्तकोनुं पूजन करी चढता परिणामे ओच्छव करवा जणावायुं छे, जेथी आत्मा पवित्र थाय अने मोक्षमाला धारण करी सर्वसुखोनो भोक्ता बने।

उपधान संबंधि दिवस, आयंबिल, उपवास, निवि, वाचनादि केटला-केटला आवे छे वगेरे विवरण कर्ताए सारी रीते आवरी लीधुं छे। उपधान विषे आवश्यक प्रायः घणी विगतो आ कृतिमांथी प्राप्त थई जाय छे। एकंदरे उपधान माटे देशी अने पद्य आ कृति वाचको माटे घणी उपयोगी बनशे।

कर्ता परिचय

प्रस्तुत कृतिना रचयिता श्री जयसौभाग्य छे। जेमना गुरु श्री विनितसौभाग्य तपागच्छ सागरशाखाना छे। प्रशस्तिमां कर्तानो समय प्राप्त थतो नथी, पण कोबा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानभंडारमां संग्रहित सूचनानुसार कर्तानी अन्य रचना 'महावीरजिन स्तवन-बर्हानपुरमंडण' रचना वर्ष१७८७ना आधारे आ कृति १८मी सदीनी होवानुं अनुमान थई शके छे। श्री जयसौभाग्यनी अन्य रचनाओमां आदिजिन स्तोत्र, आध्यात्मिक सज्झाय, पार्श्वजिन अष्टक, पार्श्वजिन स्तवन, महावीरजिन स्तवन, शालिभद्र सज्झाय वगेरे प्रायः ६९ जेटली कृतिओ प्राप्त थाय छे।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिनुं संशोधन आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर कोबामांथी प्राप्त थयेल प्रत क्रमांक- ४३७२८ ना आधारे करेल छे। आ प्रतना प्रतिलेखक श्री हस्तिसागर मुनिए संवत् १७९७ मां माघ सुदि १४ सोमवारना दिवसे स्तंभतीर्थ नगरमां आ प्रत लखी छे। आ प्रत सुंदर अने सुवाच्य अक्षरोमां छे। अंक, दंड तेमज पार्श्वरेखा लाल स्याहीथी छे। २ पत्रमां लखायेल आ प्रतनी लंबाई २६.५० तथा पहोळाई ११.५० छे। प्रति पत्रमां पंक्ति संख्या १३ छे अने प्रति पंक्तिमां अक्षर संख्या ४४ जेटली छे।

उपधान सज्झाय

॥ऐं०॥ नींदलडी वयरणि थइ रही ॥

उपधांन वहो आदर करी, लही दुर्लभ हो नरभव अवतार किं।
धर्मनां अंग पांम्या पछी, मम हारो हो तुम्हो नरनारि किं ॥१॥उपधांन...

सुभ क्षेत्र सुभ कुल सुभ रुची, सुभ गुरुनो हो संयोग ए सार किं।
ए सवि दुरलभ पांमवां, पांमीनइं हो करो सफल संसार किं ॥२॥उप०...

आवश्यक अवश्यें करो, यद्यपि छें हो बहु रजधर देह किं।
तो पिण दुखनो क्षय करिं, थोडा कालमांहो थाइं गुणनी गेह किं ॥३॥उप०...

ते आवश्यक षट विधें, आराधक हो तस षट ऊपधांन किं।
ते उपधांन हिवइं नांमथी, कहीइं छइं हो सुणज्यो सावधांन किं ॥४॥उप०...

पंचमंगल पद मोटिकां, आराधन हो पंचमंगल नांमकिं।
ए पिण श्रुतनो खंध छइं, ए भजतां हो लहो उत्तम ठांम किं ॥५॥उप०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिवस अढार छें एहना, शूरवीर नें हो दिन छें वली सोल किं।
पंच उपवास अड आंबिले, अट्ठम करी हो कीजें पारणुं झबोलि किं ॥६॥उप०...

वाचना छे ए तपतणी, साढाबारज हो कीजें उपवास किं।
पडिकमणा सुअखंधनुं, बीजुं उपधांन हो वहो एम ऊल्लास किं ॥७॥उप०...

तिहां पिण बें छें वाचना, तपसंख्या हो वली पेहला जेम किं।
शक्रस्तव इति नांमथी, पांत्रीसुं होवहो निज मनि खेम किं ॥८॥उप०...

साढीउंगणीस उपवास छें, वाचना त्रणि हो सूत्रनी होय किं।
दिन पणतीस पूरा वही, धारीजें हो पद संपद सोय किं ॥९॥उप०...

नांमस्तव अभिधांनथी, वहीइं वहीइं हो ऊपधांन ए तूर्य किं।
तप यप खप किरीया करी, कीजइं कीजइं हो नरभव ए वर्य किं ॥१०॥उप०...

वाचना तीन छें एहनी, दिन पवयणां हो वली छें अडवीस किं।
एह सूत्र आराधतां, वाधइं वाधइं हो जगमांहि जगीस किं ॥११॥उप०...

चैत्यस्तव अध्ययन छइं, दिन च्यार छें हो वली वाचना एक किं।
अढी उपवास पूरा करी, आराधो हो जिनवचन विवेक किं ॥१२॥उप०...

श्रुतस्तव सिद्धस्तव नांमथी, दिन एहना हो पूरा छें सात किं।
वाचना छे ए तपतणी,उपवासी हो साढाच्यार थात किं ॥१३॥उप०...

प्रथम बिहुं ऊपधांनमां, कीजइं नंदी हो जिनभगति विसाल किं।
अख्याणुं आदर करी,लावीजें हो सारी मोटी थाल किं ॥१४॥उप०...

शेष च्यार उपधांननी, यथाशकतिं हो कीजें श्री जिनभगति किं।
इंम उपधांन पूरां वही, माल पहिरो हो घणीघणी करी युगति किं ॥१५॥उप०...

भगति करो सात क्षेत्रनी, जिनवर तणी हो करो भगति उदार किं।
जीर्ण प्रासादनें ऊधरो, पूजो पुस्तक हो वली ज्ञानभंडार किं ॥१६॥ उप०...

गुरु गुरुणीनें भगतिथी, पूजीजइं हो वली नव नव अंग किं।
साहमीवत्सल साचवो, मनी आंणी हो चढतो उच्छरंग किं ॥१७ ॥उप०...

इंम भगति युगतिथी साचवी, कीजें कीजें हो अवतार पवित्र किं।
दुरलभ नरभव पांमीनइ, फल लीजें हो माहरा धर्मनां मित्र किं ॥१८॥उप०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इंम धरम मित्रना मुखथकी, सांभलता हो जाग्यो धरमनो राग किं।
चोवीस जिन आराधवा, चउवीसी हो निज मननें राग किं ॥१९॥उपधा०...

उपधांन वह्यां आणंदस्युं, बत्रीसी हो वली पोहती प्रमाण किं।
पूजा प्रभावना मोटि की, निरवाही हो वली श्री गुरु आंण किं ॥२०॥उप०...

माला पहिरण ऊजम हवइं, पोहचें पोहचें हो जिन धरम पसाय किं।
विनितसौभाग्य वर विबुधना, वाचक जय हो नितु नितु गुण गाय किं ॥२१॥
उपधांन वहो आदर करी ॥

इति श्री उपधांननी सज्झाय ॥ समाप्ताः ।संवत्१७९७ ना वर्षे माघ सुदि १४ सोमे ।श्री हस्तिसागरेण लिपिकृता। श्री स्थंभतीर्थनगरे। श्री रस्तुः।

❊ ♦ ❊

सुभाषित

बात सुनाऊं कौन को, बहरा भयो जहान।
सुनत सुनत नहीं सुनत है, विषयो में गलतान ॥
विषयो में गलतान, जीभ को पूरो चट्टू।
नैन नारि के लखत, उसी तम होवे लट्टू ॥
कहे निरभयानंद, ज्ञान कैसे दरसाऊँ।
बहरा भयौ जहान कौनको बात सुनाऊँ ॥

हस्तप्रत क्र. २७९२

भावार्थ :- कवि निर्भयानंदजी कहते हैं कि मैं किसको अपनी बात सुनाऊँ? सारी दुनिया बहरी हो गई है। मेरी बात सुनते हुए भी नहीं सुन रही है क्योंकि दुनिया विषय विकारों में आसक्त, रसास्वाद में लोलुप और स्त्रीयों में लंपट हो चूकी है। ऐसे में अपना ज्ञान कैसे प्रगट करूँ?

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री लक्ष्मीकीर्ति रचित

नवतत्त्व स्तवन

उपेन्द्र डी. भट्ट

नवतत्त्व समस्त शास्त्रोनो सार कही शकाय। आमां समग्र विश्वना पदार्थोनो समावेश थई जाय छे। अत्यार सुधीमां अनेक विद्वानोए नवतत्त्वोनुं प्रतिपादन करती कृतीओ रचेल छे। आचारांगसूत्र, स्थानांगसूत्र, समवायांगसूत्र तथा प्रज्ञापनादि आगमो आ तत्त्वना ज्ञाननो मुख्य स्रोत छे। तेना आधारे परवर्ती समयमां प्राकृत, संस्कृत, देशी आदि भाषाओमां अनेक रचनाओ थती आवी छे। यथा -

प्राकृत भाषामां अज्ञात जैनाचार्य द्वारा रचित नवतत्त्व प्रकरण २९ गाथा, ६० गाथा, १०७ गाथाओमां प्राप्त थाय छे। संस्कृत भाषामां नवतत्त्व प्रकरणनी टीकाओ, प्रख्यात तपागच्छीय आचार्य श्री जगच्चंद्रसूरि महाराजना शिष्य देवेंद्रसूरि महाराज द्वारा (१४मी सदीमां) रचित धर्मरत्न प्रकरणनी सुखबोधा टीका आदि ग्रंथो तथा देशी भाषामां नवतत्त्व चौपाई, नवतत्त्व थोक, नवतत्त्व विचार, नवतत्त्व चौभंगी-भांगा स्वरूप तथा आधुनिक गुजराती-हिंदी भाषामां अनुवाद, भाषाटीका, विवेचन, शब्दार्थ आदि कृतिओ जोवा मळे छे।

प्रस्तुत रचना पण तेमांनी ज एक छे। श्री लक्ष्मीकीर्ति द्वारा रचित नवतत्त्व स्तवनमां ९ तत्त्वोना भेद-प्रभेदनुं वर्णन सारी रीते करेलुं जोवा मळे छे।

कृति परिचय

कर्ता द्वारा शांतिजिनेश्वरनुं मंगल स्मरण करी कृतिनो प्रारंभ करायेल छे। प्रस्तुत कृति लक्ष्मीकीर्ति द्वारा मारुगुर्जर भाषामां पद्यबद्ध २९ गाथाओमां रचायेली छे। आ कृतिमां जीव, अजीव, पुण्य, पाप आदि नव तत्त्वोनुं वर्णन करेल छे। नव तत्त्वोना भेदोनुं निरुपण आ प्रमाणे छे-जीवतत्त्वना १४ भेद, अजीवतत्त्वना १४ भेद, पुण्यतत्त्वना ४२ भेद, पापतत्त्वना ८२ भेद, आश्रवतत्त्वना ४२ भेद, संवरतत्त्वना ५७ भेद, निर्जरातत्त्वना १२ भेद, बंधतत्त्वना ४ भेद अने मोक्षतत्त्वना ९ कुल २७६ भेदोनुं वर्णन कृतिमां करेलुं छे।

प्रत्येक तत्त्वना भेद बतावी आ तत्त्वोने हेय, ज्ञेय, उपादेय तथा रूपी-अरूपी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेमज जीव-अजीवमां घटावी न्यायवादनी पण थोडीक वात करी छे। अंते कळशमां पुनः शांतिनाथ भगवाननुं स्मरण तथा पोताना गुरु साथे पोतानुं नाम पण जणावी कृति पूर्ण करेल छे।

कर्ता परिचय

कृतिना अंते आपेल कळशना आधारे प्रस्तुत कृतिना कर्ता केसरकीर्तिना शिष्य लक्ष्मीकीर्ति छे। लक्ष्मीकीर्ति द्वारा रचित अन्य कृतिओ आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां उपलब्ध छे। परंतु ते कृतिओमां पण कर्ता संबंधी विशेष माहिती प्राप्त थती नथी। लक्ष्मीकीर्तिना शिष्य शिवकीर्ति द्वारा वि.सं. १८२१मां विक्रमराजा चौपाईनी रचना करवामां आवी छे, तेमां तेओ नोंधे छे के-

"तपगछमांहे दीपता दीसै, श्री सूरज जेम सवाया रे लो। श्री विजयधर्म्मसूरीसर दीपै, श्री संघ बहुत सुहाया रे लो ॥६६॥ भक्तिधर्म्म भावै नित नमीऐ, केसरिकीर्ति सवाया रे लो। लायक पंडित लक्ष्मीकार्तिजी। गुण शिवकीर्ति गाया रे लो॥६७॥ संवत आठारे इकवीस में जाणो, फागुण सुदि तिथ बीजै रे लो" आ पाठमां दर्शावेल लक्ष्मीकीर्ति प्रस्तुत कृतिना पण कर्ता होय तो तेमना गच्छ, दादागुरु, शिष्य तथा समयनुं अनुमान थई शके तेम छे।

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिथी संबंधित आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामां संग्रहित हस्तप्रत संख्या २१३३९ना आधारे आ कृतिनुं संपादन करवामां आव्युं छे। आ प्रतनुं प्रतिलेखन वर्ष वि.सं. १९वीं अनुमानित कही शकाय छे। अक्षर सामान्य छे। गेरु लालरंगथी अंकित विशेष पाठ छे।

प्रतमां ५ पत्रो छे, जेना अंतर्गत १. नवतत्त्व स्तवन (पत्रांक १अ-२अ), २. षट्द्रव्य विचार स्तवन (पत्रांक २अ-३अ), ३. मोहनी स्तवन (पत्रांक ३अ-४आ), ४. जीवभेद स्तवन (पत्रांक ४आ-५अ) आम कुल ४ कृति आवेली छे। दरेक कृतिनां कर्ता श्री लक्ष्मीकीर्ति छे। प्रतनी लेखनशैली सुंदर, स्पष्ट अने सुवाच्य छे। प्रांते कृति संपादनमां सहयोग आपवा बदल संपादक मंडळनो आभार मानुं छुं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवतत्त्व स्तवन

॥ दूहा ॥

शांति जिनेसर सहु सरण, धरण शुकल सो ध्यान।
हरण पाप हेलां जिके, चरण चरण गुण ग्यान ॥१॥

सोलम सो जिनवर सखर, भाव सखर सुंभाइ।
तवन सु नवतत्तां तणो, गुणस्युं ते गुण गाय ॥२॥

नवतत के न्यानी निपट, कपट कदाग्रह कापि।
परगास्या परगटपणै उत्पथ पथ उत्थापि ॥३॥

॥ ढाल ॥ राणी राजुल इण परि वीनवै

न्यानी ते नवतत नित नुवै, सो सरब सिद्धांतरो सार रे ।
जिण जाण्यां जडमति जाइ है, उर उपजै अकलि अपार रे ॥१॥न्या०...

जीव अजीव पुन्य पाप जे, आश्रव अरु संवर एह रे।
निर्जरा बंध मोख नाम है, जाणो ए नवतत जेह रे ॥२॥न्या०...

चउद चउद बायाल चवि, बायासी बायाल रे।
सत्तावन बारह सही, वदि चउ नव भेद विचाल रे ॥३॥न्या०...

सुखम बादर एकेंद्री सो, वलि विगल असन्नि सन्नि रे।
अपजत्ता पजत्ता अखो, भेद चउदै जीवतत भिन्न रे ॥४॥न्या०...

धम्म अधम्म नभरा निरखि, त्रिण त्रिण गणि भेद सुताप रे।
खंध देश प्रदेश सुहै खरा, अद्धा इहां इक गणि आय रे ॥५॥न्या०...

चउ भेद जु पुदगल राचवो, खंध देश प्रदेश प्रमाण रे।
ऐ चउदै भेद अजीवना, पंचद्रव्यांरो परमाण रे ॥६॥न्या०...

साया उच मणु सुर दु दु, पंचेंदी तणु पण जांण रे।
आदिम त्रि तणु उपांग गणि, सुभ आदि संघैण संठाण रे ॥७॥न्या०...

वण्ण चउ अगुरु लघु परिघ, उस आतप उज्जोइ रे।
सुभ खगई नमिण जु तस्सदस, सुरनर तिरि तिथयर सोइ रे ॥८॥न्या०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुन्य प्रकृति पढियां पढी, बायालसु सुविच्यार रे।
इक्षुरस समयै अछै, पाप प्रकृति कटु प्यार रे ॥९॥न्या०...

अंतरा आवरणनी अए, असाया अरु मिच्छ रे।
दस थावर निरय जु त्रिक दख्या, पणवीस कषाय सुपिच्छ रे ॥१०॥न्या०...

वलि विगल एकेंद्री तिरिय बे, कुत्सित गति उपघात रे।
वन्नादिक चउ अप्रसस्त वदि, वदी बहुत्तरी बात रे ॥११॥न्या०...

संस्थानरु संघैण सहु, प्रथम विना दसपेखि रे।
पापतत्वना पाडुवा, बायासी सुविशेष रे ॥१२॥न्या०...

अव्रत पण पण इंद्रीयां, चउ कसाय त्रिण योग रे।
पणवीस किरिया पण गण्यां, भणि आश्रव(त)तना भोग रे ॥१३॥न्या०...

सुमति गुपति परिसह सहै, मुनिवर दसधरमै मन्न रे।
बाण चरण बारह भावना, संबर सत्तावन्न रे ॥१४॥न्या०...

षट् अभ्यंतर बाह्य षट्, तप द्वादस विधि कहै तेह रे।
कर्म करी परिकरि अरी, नाम निर्जरा जेह रे ॥१५॥न्या०...

बंधतत्व चोविध चवो, प्रकृति स्थिति अनुभाग रे।
प्रदेशबंध चोथो पुणो, लखि बंधतत्व सो लाग रे ॥१६॥न्या०...

स्पृष्टबद्ध निबद्धसो, सुणो निकाचित संग रे।
दिष्टांतै करि देखियै, वदि वस्त्रादि करै रंग रे ॥१७॥न्या०...

पद सत्यांरी परूवणा, द्रव्य क्षेत्र काल भाव रे।
अंतरस्पर्श भाग अल्पबहु, भणि मोखतत्वरा भाव रे ॥१८॥न्या०...

षटसत्तरि दोइसै खरी, नवतत्वांरी न्याय रे।
प्रकृति प्ररूपी पंडितां, अन्य अषै सो अन्याय रे ॥१९॥न्या०...

नाम न कहीया केतला, प्रकृति अछै परगट्ट रे।
सहगुरुरा मुखसुं सुणे, गुणे ग्रहो गहगट्ट रे ॥२०॥न्या०...

हेया सव पुन्य बंध पाप है, जीव अजीव बे ज्ञेय रे।
संबर निजरजर मोख सो, ऐ त्रिण गणि उपादेय रे ॥२१॥न्या०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सबर निर्जर मोख सो, ऐ त्रिण अरूपी आखी रे।
रूप अरूपी अजीव है, सेष सरूपी साखि रे ॥२२॥न्या०...

मोख संबर निर्जर मुणो, पढि जीवतत्व पययि रे।
आश्रव जीव अजीव है, अन्य अजीवमै आय रे ॥२३॥न्या०..

एक कहै जीव एक है, आठ अजीवसु आखि रे।
एक कहै अठ जीव है, एक अजीवसु साखि रे ॥२४॥न्या०...

इक नय आश्रव मै मिलै, सहु तत्वांरी संच रे।
जीव अजीव विना जिके, पढियै यो परपंच रे ॥२५॥न्या०...

वादी जे वाद वसै वदै, उपनय नय आणि अनेक रे।
सत्यवादी साचो संग्रह, टालैं मन वच री टेक रे ॥२६॥न्या०...

मार्गणागुण परि मेलतां, सत्य पदादिक सांच रे।
बंधादिक उपरि वंदो, विधि इम नवतत वाचि रे ॥२७॥न्या०...

नवतत्वां मै निपुण जे समजै, सो समकित सुद्ध रे।
जीव अजीव पुन्य पाप जे, नवि समझै जे नवि बुद्ध रे ॥२८॥
न्यानी ते नवतत नितनु वै..

॥ कलश ॥

शांति जिनवर वरण सुवरण, वंदीनै वर वरणव्या।
केसरकीरति गुरु कृपा करि, मस्तकै हस्त जु ठव्या॥
तिण प्रतापसु छोडि तापसु, तवनसु नवतत्वां तणो।
कहै लक्ष्मीकीरति एमई रति, भावसुं भवियण भणो ॥२९॥

॥ इति नवतत्त्व स्तवनं ॥

❊ ♦ ❊

जे सजन हसी बोलावता, दिन प्रति सउ वार।
ते सजन माटी हुआ, भाडा कीआ कुंभार॥ **ह.प्र.क्र.१३१०७१**

भावार्थः- जो स्नेहीजन दिन में सौ बार हसकर बुलाता था, वह मिट्टी में मिल गया, जिससे कुम्हारने बर्तन भी बना लिए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह

पुण्यविजयजी

(गतांकथी आगळ..)

बन्नेय संप्रदायना विद्वान ग्रंथकारोए कर्मवाद विषयक साहित्यने प्राकृत-मागधी, संस्कृत तेम ज लोकभाषामां उतारवा एक सरखो प्रयत्न कर्यो छे। श्वेतांबर आचार्योए कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, प्राचीन-अर्वाचीन कर्मग्रंथो अने तेना उपर चूर्णि, भाष्य, टीका, अवचूर्णि, टिप्पणक, टबाओ आदिरूप विशिष्ट कर्मसाहित्यनुं सर्जन कर्युं छे; ज्यारे दिगंबर आचार्योए महाकर्मप्रकृतिप्राभृत, कषायप्राभृत, गोम्मटसार, लब्धिसार, क्षपणसार, पंचसंग्रह वगेरे शास्त्रो अने तेना उपर मागधी, संस्कृत, हिन्दी आदि भाषामां व्याख्यात्मक विशाळ कर्मसाहित्यनी रचना करी छे।

कर्मवाद विषयक[1] उपर्युक्त उभय संप्रदायने लगता साहित्यमां अनेक प्रकारनी विशेषता होई एक बीजा संप्रदायना साहित्य तरफ दुर्लक्ष करवुं के उपेक्षा करवी ए कर्मवाद विषयक अपूर्व ज्ञानथी वंचित रहेवा जेवी ज वात छे। छेवटे टूंकमां एटलुं ज कहेवुं बस छे के जैनदर्शन मान्य कर्मवादने पुष्ट बनाववामां उभय संप्रदाये एक सरखो फाळो आप्यो छे।

जैन कर्मवादसाहित्यनी विशेषता

जैनदर्शने कर्मवादना विषयमां विचार करतां कर्म शी वस्तु छे? जीव अने कर्मनो संग केवी रीते थाय छे तेम ज ए संयोग क्यारनो अने क्या रूपमां छे? कर्मनां दलिक, तेनी वर्गणाओ, तेना भेदो, तथा ते केवी रीते बंधाय अने उदयमां आवे छे? उदयमां आववा पहेलां तेना उपर जीव द्वारा शी शी क्रियाओ थाय छे?

कर्मोने आश्रयीने जीव द्वारा थती विविध क्रियाओ, जेने करण कहेवामां आवे छे, ए शी वस्तु छे अने तेना केटला प्रकारो छे? कर्मना बंध अने निर्जरानां शां शां कारणो अने इलाजो छे? कर्मबंध अने तेना उदयादिने परिणामे आत्मानी कई कई शक्तिओ आवृत तेम ज विकसित थाय छे ? कया कारणसर कर्मोनो बंध दृढ अने शिथिल थाय छे ?

---

1. श्वेतांबर-दिगंबर कर्मवाद विषयक साहित्यनो परिचय मेळववा इच्छनारे श्री जैन आत्मानंद सभा, भावनगर तरफथी बहार पडेल अने पूज्यपाद गुरुदेव श्री चतुरविजयजी महाराजे संपादित करेल सटीकाश्चत्वारः प्राचीनाः कर्मग्रन्थाः नी प्रस्तावना अने तपागच्छनायक श्री देवेन्द्रसूरि विरचित चत्वारः कर्मग्रन्थाः मां ना छट्ठा परिशिष्टने जोवां.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मना बंध अने निर्जराने लक्षी जीव केवी केवी विशिष्ट क्रियाओ करे छे? कर्मना बंध अने निर्जरानो आधार शाना उपर छे?

आत्मानी आंतरिक शुभाशुभ भावना अने देहजनित बाह्य शुभाशुभ क्रिया कर्मबंधादिकना विषयमां के भाग भजवे छे? शुभाशुभ कर्मो अने तेना रसनी तीव्र-मंदताने परिणामे आत्मा केवी केवी सम-विषम दशाओनो अनुभव करे छे? वगेरे संख्यातीत प्रश्नोनो विचार अने उकेल करेल छे। आ उपरांत अनादि कर्म परिणामने प्रतापे आत्मा केवी केवी परिस्थितिओमांथी पसार थयो छे, थाय छे अने विविध क्रियाओ कर्ये जाय छे, एनुं वास्तविक अने विशिष्ट वर्णन जैनदर्शने वर्णवेल कर्मवादमां जेटला विपुल अने विशद रूपमां मळी आवशे, एटले स्पष्ट रूपमां भारतीय इतर दर्शनसाहित्यमां क्यारेय लभ्य नथी।

भारतीय अन्य दर्शन साहित्यमां आत्मानी विकसित दशानुं वर्णन विशद रूपमां मळी आवशे पण अविकसित दशामां एनी शी स्थिति हती ? कई कई परिस्थितिओ एणे वटावी अने तेमांथी तेनो विकास कई वस्तुना पाया उपर थयो, ए वस्तुनुं वर्णन लगभग घणुं ज ओछा प्रमाणमां मळी आवशे।

महान आचार्य श्री सिद्धर्षिनी उपमितिभवप्रपंचा कथा, मलधारी श्री हेमचन्द्रसूरिनी भवभावनो, मंत्री यशपालनुं मोहराज पराजय नाटक; महोपाध्याय श्री यशोविजयजीनी वैराग्यकल्पलता वगेरे जैनदर्शनना कर्मवादने अति बारीकाईथी रजू करती कृतिओनुं निर्माण अने ए कृतिओ आजे भारतीय साहित्यमां अजोड स्थान शोभावी रही छे ए जैनदर्शनना कर्मवादने ज आभारी छे।

प्रसंगोचित आटलुं जणाव्या पछी हवे मूळ विषय तरफ आवीए। मूळ विषय पंचसंग्रह महाशास्त्रने गुजराती अनुवाद छे। ए अनुवादने अंगे कांई पण कहेवा पहेलां पंचसंग्रह शी वस्तु छे अने तेने लगतुं क्युं क्युं विशिष्ट साहित्य आजे लभ्य छे इत्यादि जाणवुं–जणाववुं अति आवश्यक होई शरूआतमां आपणे ए ज जोई।

पंचसंग्रह अने तेने लगतुं साहित्य

पंचसंग्रह ए कर्मवादनिष्णात आचार्य श्री चंद्रर्षि महत्तर विरचित कर्म साहित्यविषयक प्रासादभूत महान ग्रंथ छे। एमां आचार्यश्रीए जणाव्या प्रमाणे शतक आदि पांच ग्रंथोनो संक्षेपथी समावेश होई अथवा एमां पांच द्वारनुं वर्णन होई एने पंचसंग्रह ए नामथी ओळखाववामां आव्यो छे। ग्रंथकारे मूळ ग्रंथमां पांच द्वारोनां नामो आप्यां छे, पण शतक आदि पांच ग्रंथो कया ए मूळमां के स्वोपज्ञ टीकामां क्यांय जणायुं नथी। छतां आचार्य श्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मलयगिरिए आ ग्रंथनी[1] टीकामां जणाव्युं छे ते मुजब आ ग्रंथमां आचार्य (१) शतक, (२) सप्ततिका, (३) कषायप्राभृत, (४) सत्कर्म अने (५) कर्मप्रकृति आ पांच ग्रंथोनो संग्रह कर्यो छे। आ पांच ग्रंथो पैकी सप्ततिका अने कर्मप्रकृति ए बे ग्रंथो आमां स्पष्ट रीते जोवामां आवे छे, पण बाकीना त्रण ग्रंथोनो आचार्ये केवी रीते समावेश कर्यो छे ए स्पष्ट रीते समजवुं घणुं कठिन छे।

खास करीने आजे जे बे ग्रंथो आपणने मळता नथी एवा सत्कर्म अने कषायप्राभृतनो समावेश आचार्ये कये ठेकाणे अने केवी रीते कर्यो छे ए समजवानुं के कल्पना करवानुं काम तो अत्यारे आपणे माटे अशक्य ज छे। आ स्थितिमां आपणे एटलुं अनुमान करी शकीए के कर्मप्रकृति अने सप्ततिका ए बे ग्रंथोना विषयो अति स्वतंत्र होई आचार्ये ए बे ग्रंथोने स्वतंत्र रीते आमां संग्रह्या छे अने बाकीना त्रण ग्रंथोनो विषय परस्पर संमिलित थई जतो होई ते ग्रंथोने संमिलित रूपे संग्रह्या हशे।

भगवान श्री चंद्रर्षि महत्तरे प्रस्तुत ग्रंथमां शतक आदि जे पांच ग्रंथने संग्रह कर्यो छे, ते पैकी एक पण ग्रंथना नामनो साक्षी तरीके पण टीकामां क्यांय उल्लेख कर्यो नथी। परंतु आचार्य श्री मलयगिरिनी टीकामां कषायप्राभृत सिवायना चार ग्रंथोनो प्रमाण तरीके अनेक ठेकाणे उल्लेख थयेलो जोवामां आवे छे। सत्कर्मने उल्लेख[2] तेमणे बे ठेकाणे कर्यो छे पण ते एक ज रूप होई खरी रीते ए एक ज गणी शकाय। शतक, सप्ततिका अने कर्म प्रकृति ए त्रण ग्रंथो अत्यारे अलभ्य होई ए विषे आपणे खास कशुं जाणी के कही शकता नथी।

आ ठेकाणे आपणे एटलुं कही शकीए के, आचार्य श्री मलयगिरि समक्ष सत्कर्मशास्त्र विद्यमान हतुं, परंतु कषायप्राभृत ग्रंथ तो तेमने आपणी जेम लभ्य नहतो ज; नहि तो तेओ आ ग्रंथने उल्लेख कोई ने कोई ठेकाणे कर्या सिवाय रहेत नहि।

आचार्य श्री चंद्रषि महत्तरे पंचसंग्रह ग्रंथमां जे पांच ग्रंथने संग्रह कर्यो छे ते पैकी शतक, सप्ततिका अने कर्मप्रकृति ए मौलिक ग्रंथो श्वेतांबराचार्यकृत ज छे ए वस्तु अत्यारे

---

1. "पञ्चानां शतक-सप्ततिका-कषायप्राभृत-सत्कर्म-कर्मप्रकृतिलक्षणानां ग्रन्थानाम् ॥" - पंचसंग्रह गाथा १ टीका ॥

2. ये पुनः सत्कर्माभिधग्रन्थकारादयस्ते क्षपकक्षीणमोहान् व्यतिरिच्य शेषाणामेव निद्राद्विकस्योदयमिच्छति। तथा तद् ग्रन्थः :-" निद्दादुगस्स उदओ, खीण(ग)खवगे परिच्चज्ज।" तन्म तेनोदीरणाऽपि इत्यादि ॥ मुक्ता० आवृत्ति, पत्र ११६ ॥
तदुक्त सत्कर्मग्रन्थे-"निद्दादुगस्स उदओ, खीणगखवगे परिच्चज्ज ॥" पत्र २२७ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मळता आ त्रण ग्रंथे साथे पंचसंग्रहमां संगृहीत विषयनी सरखामणी करतां निर्विवाद रीते समजी शकाय छे।

फक्त सत्कर्म अने कषायप्राभृत ए बे शास्त्र, जे अत्यारे श्वेतांबर संप्रदायमां लभ्य न होई, दिगंबर संप्रदायमां लभ्य होवानुं मानवामां आवे छे। एटले आचार्य श्री चंद्रर्षिए संगृहीत सत्कर्म अने कषायप्राभृत ग्रंथ दिगंबरमान्य ग्रंथ हशे के श्वेतांबरमान्य स्वतंत्र ग्रंथ हशे ए शंका स्वाभाविक रीते ज उपस्थित थया सिवाय रही शकती नथी। आनुं समाधान स्पष्ट रूपे करवुं धारी लईए तेटलुं सरळ भले न होय, ते छतां एटली वात तो निर्विवाद छे के प्रस्तुत पंचसंग्रह शास्त्रमां श्वेतांबराचार्य कृत प्रकरणना संग्रहनो ज संभव अधिक संगत तेम ज औचित्यपूर्ण छे।

अहीं एक वस्तु स्पष्ट करी देवी योग्य छे के, "कषायप्राभृत ए नाम प्राभृतशब्दान्त होई समय प्राभृत, षट्प्राभृत वगेरे प्राभृतान्त ग्रंथ दिगंबर संप्रदायना होई कषायप्राभृत ग्रंथ पण दिगंबराचार्य कृत होवो जोईए,' एम कोईने लागे; आ सामे एटलुं ज कहेवुं बस छे के, श्वेतांबरमान्य ग्रंथराशिमां सिद्धपाहुड, सिद्धप्राभृत, कर्मप्राभृत वगेरे ग्रंथो सुप्रसिद्ध छे, ए रीते श्वेतांबर संप्रदायमां कषायप्राभृत ग्रंथ होवामां बाधक थवाने कशुं ज कारण नथी। पंचसंग्रह वगेरेनी जेम समान नामना अने समान विषयना ग्रंथो आजे पण लभ्य छे।

पंचसंग्रह उपर स्वोपज्ञ अने आचार्य श्री मलयगिरिरिकृत एम बे समर्थ टीकाओ मळे छे, जे अनुक्रमे दश हजार अने अढार हजार श्लोक प्रमाण छे। आ बन्नेय टीकाओ एकीसाथे अति व्यवस्थित रूपमां "मुक्ताबाई जैन ज्ञानमंदिर, डभोई" तरफथी प्रसिद्ध थई चूकेल छे। तेम ज श्रेष्ठिवर्य देवचंद लालभाई वगेरे तरफथी आ टीकाओ छूटी छूटी पण प्रकाशित थई चूकेल छे।

आ उपरांत खंभातना शांतिनाथना ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारमां वा(रा ?)मदेवकृत २५०० श्लोक प्रमाण दीपक नामनी टीका होवानी नोंध मळे छे, परंतु आ टीका मारा जोवामां हजु सुधी आवी नथी। आ दीपक गमे तेवो होय ते छतां कहेवुं जोईए के स्वोपज्ञ टीका अने मलयगिरिकृत टीकानी कक्षाथी ए हेठळ ज हशे अथवा आ टीकाओने अनुसरीने ज ए संक्षिप्त कृति बनी हशे।

क्रमशः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि

राहुल आर. त्रिवेदी

(गतांक से जारी)

२) मेकेनिकल क्लिनिंग

पाण्डुलिपियों का संरक्षण उसकी वस्तुस्थिति पर निर्भर करता है। संरक्षण कई चरणों में होता है। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि एक ही वस्तु पर सारे संरक्षण उपचारों का प्रयोग किया जाये, यह वस्तु की परिस्थिति पर निर्भर करता है।

पाण्डुलिपियों में प्रायः सफाई के अलावा किसी अन्य उपचार की आवश्यकता नहीं पड़ती है। अन्य परिस्थितियों में विअम्लीकरण(De acidification) या वस्तु की स्थिति में सुधार किया जाता है। सुधार या मरम्मत बड़ी या छोटी हो सकती है। यह पूर्णतया वस्तु की स्थिति पर निर्भर करता है।

पाण्डुलिपियों की शुष्क सफाई सौन्दर्य की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि पाण्डुलिपियों के ऊपर पड़ी धूल उसकी लिखावट तथा सजावट को ढंककर उसके सौंदर्य को नष्ट कर देती है, अगर धूल को साफ नहीं किया जाता है तो यह पड़ी-पड़ी नमी के कारण दाग का रूप ले लेती है जिसे बाद में हटाना बहुत कठिन हो जाता है। इस सूची में आने वाले कार्य निम्नलिखित हैं-

क) ब्रश

कागजों को साफ करने के लिए चिपटे व कोमल ब्रश की आवश्यकता पडती है। इनको बहुत सावधानी से प्रयोग करना चाहिए। कठोर ब्रश कणों को बाहर तो निकाल सकता है लेकिन साथ ही कागज को भी नुकसान पहुँचा सकता है। यद्यपि ब्रश के द्वारा साफ करने में अधिक समय जाता है लेकिन इससे पाण्डुलिपि को बहुत कम नुकसान पहुँचता है।

स्वच्छीकरण के बाद प्राप्त होने वाले धूल कणों को कागज या पोलिथीन शीट में इकट्ठा कर लेते हैं। सफाई क्रिया पूरी हो जाने पर गन्दगी को उचित ढंग से विसर्जन कर देना चाहिए, जिससे हस्तप्रतों के कमरे में पुनः धूल फैलने की संभावना समाप्त हो जाये। यह सफाई का कार्य हो सके वहाँ तक अलग कक्ष में ही करनी चाहिए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ख) दबाव-दार हवा (Compressed Air)

जब बहुत अधिक संख्या में कागजों व हस्तप्रतों की सफाई करनी होती है तो दबावदार हवा का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि यह बहुत तेज व अत्यन्त प्रभावकारी होती है। हवा की तीव्रता को हस्तप्रतों के ढेर की तरफ इस तरह कर दिया जाता है कि उनमें पड़े सारे धूलकण उन्हें बिना नुकसान पहुँचाए उड़ जाएँ। इस बात को सुनिश्चित कर लेना चाहिए की हवा से पाण्डुलिपि के नाजुक कागज को कोई नुकसान न पहुँचे। हवा की तीव्रता को इस प्रकार संचालित करना चाहिए कि वह हस्तप्रतों पर बहुत तेजी से प्रहार न करे।

ग) रबड़ (Eraser)

हस्तप्रतों की सतह पर से धूलकण को साफ करने के पश्चात पेन्सिल से बने चिन्हों को मुलायम रबड़ से मिटाया जा सकता है। बाजार में कई प्रकार के मिटाने के रबड़ उपलब्ध हैं, इनमें से सही प्रकार का चयन किया जा सकता है। पुस्तकविक्रेताओं के पास उपलब्ध मुलायम 'विनायल इरेसर' इस कार्य के लिए सबसे उत्तम माना जाता है। इस इरेसर की गुणवत्ता यह है कि यह अपने द्वारा बनाये गये चूर्ण को स्वयं ही उठा लेता है। रंगीन व कठोर रबड़ का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, हस्तप्रत की स्थिति को ध्यान में रखते हुए बड़ी सावधानीपूर्वक यह कार्य करना चाहिए।

पाण्डुलिपि की सतह को सूखा ही साफ करना चाहिए। रबड़ (Eraser) धूल, मैल तथा फफूंद के धब्बे आदि को साफ करने में ही प्रभावकारी सिद्ध होता है।

(क्रमशः)

क्या आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं ?

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा में विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य पुस्तकों का अतिविशाल संग्रह है, जो हम ज्ञानभंडारों को भेंट में देते हैं। भेंट में देने योग्य पुस्तकों की सूची तैयार है। यदि आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं, तो यथाशीघ्र संपर्क करें। पहले आने वाले आवेदन को प्राथमिकता दी जाएगी।

ग्रंथपाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्तकुमार

पुस्तक नाम	-	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र
कर्ता	-	श्री विमलाचार्य
संपादक	-	श्री जिनेशचंद्रविजयजी गणि
प्रकाशक	-	श्री रांदेर रोड जैन संघ, सुरत
प्रकाशन वर्ष	-	सन्-२००८
भाषा	-	संस्कृत
विशेषता	-	सरल शैली एवं सुगम्य भाषा में रचित.

समग्र जैन संघ में सुपरिचित त्रिषष्टिशलाकापुरुषों के चरित्र को आचार्य विमलसूरिजी ने सरल गद्यात्मक शैली एवं सुगम्य संस्कृत भाषा में रचना कर सामान्य जीवों के लिए भी सुलभ बना दिया है। समयावांग आदि आगमों में २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव (नारायण) और ९ बलदेव इस प्रकार कुल ५४ महापुरुषों के चरित्र का उल्लेख मिलता है, जिन्हें उत्तमपुरुष भी कहा गया है। बाद में आचार्य श्री जिनसेनसूरिजी तथा कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने अपने ग्रंथों में ९ प्रतिनारायण को जोड़कर ६३ की संख्या मानी है तथा उत्तमपुरुष की जगह शलाकापुरुष की संज्ञा दी है। इसके बाद श्री भद्रेश्वरसूरिजी ने ९ नारदों की संख्या को जोड़कर कुल ७२ की संख्या बताई है। श्री हेमचंद्राचार्यजी ने शलाकापुरुषों का अर्थ जातरेखा किया है, तो आचार्य श्री भद्रेश्वरसूरिजी ने सम्यक्त्वरूप शलाका से युक्त अर्थ घटित किया है ।

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य द्वारा त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र की रचना के बाद इस पवित्र चरित्र कथा की लोकचाहना में इतनी अधिक वृद्धि हुई कि उनके पश्चात् अनेक पूज्य महात्माओं ने इस विषय के ऊपर ग्रंथों की रचना की है। जैसे श्री वज्रसेनसूरिजी, श्री विमलसूरिजी, श्री मेघविजयजी, चंद्रमुनिजी, साध्वी श्री अजितसुंदरीजी आदि अनेक विद्वानों की त्रिषष्टि के ऊपर रचनाएँ प्राप्त होती हैं।

सरल संस्कृत भाषा में गद्यात्मक शैली में लिखित त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र के बीच-बीच में अलग-अलग छंदों में सुंदर श्लोक भी मिलते हैं। जिसे देखने से उनकी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्कृष्ट प्रतिभा का ख्याल आता है। कुछ विद्वानों का मत है कि जो व्यक्ति इतने सुंदर श्लोकों की रचना करने की क्षमता रखता हो, वह व्यक्ति गद्य में इतनी सरल रचना कैसे कर सकता है। इसका सीधा अर्थ है कि आचार्य श्री विमलसूरिजी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

आचार्य श्री विमलसूरिजी ने श्री हेमचंद्राचार्य कृत त्रिषष्टि के चरित्रों के क्रम का ही अनुकरण किया है। प्रत्येक चरित्र में होने वाली घटनाओं का क्रम भी उसी अनुरूप रखा है। किन्तु कलिकाल सर्वज्ञ की तरह प्रसंग विस्तार, ऋतुओं का वर्णन आदि को विशेष महत्त्व नहीं देते हुए बहुत ही कम शब्दों में प्रत्येक घटनाओं का वर्णन किया है। इस कृति की विशेषता है कि इसके कथानक में महापुरुषों के जीवन के प्रत्येक पहलु का वर्णन सरल एवं संक्षिप्त रूप से किया गया है। यह कृति मल्लिनाथ चरित्र तक ही उपलब्ध है। इसके बाद के अंश की रचना हुई या नहीं यह भी विचारणीय प्रश्न है।

प्रस्तुत कृति के कर्ता आचार्य श्री विमलसूरिजी के संबंध में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है, यह कृति ही अपूर्ण उपलब्ध है तथा कृति के उपलब्ध अंश में कर्ता के संबंध में कोई स्पष्ट संकेत भी उपलब्ध नहीं है। मंगलाचरण के ८वें श्लोक में मलधारी गच्छ के आचार्यों को नमस्कार किया गया है, जिससे यह ज्ञात होता है कि वे मलधारी गच्छ के थे। इससे अधिक उनके संबंध में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। जिस प्रत के आधार पर इस कृति का संपादन किया गया है वह जेसलमेर की प्रति १४वीं शताब्दी की है। इससे इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि ये १४वीं के पूर्व तथा कलिकालसर्वज्ञ के बाद के विद्वान हैं।

सामान्य जनों के लिए हृदय में आह्लाद उत्पन्न करने वाले एवं अति उपयोगी इस कृति का संपादन करके पूज्य गणिवर्य श्री जिनेशचंद्रविजयजी महाराज साहब ने समाज पर बहुत बड़ी कृपा की है। इसका प्रकाशन तथा छपाई भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक की गई है। प्रभु जिनदेव से प्रार्थना है कि गणिवर्य श्री जिनेशचंद्रविजयजी महाराज साहब भविष्य में भी इसी प्रकार और उपयोगी ग्रंथों का संपादन करते रहें, और समाज के समक्ष बहुमूल्य रत्न उपस्थित करते रहें। कोटिशः वंदना ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

जिनशासन के महान प्रभावक, राष्ट्रसन्त श्रद्धेय गुरुदेव पूज्य आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का आगामी चातुर्मास

राष्ट्रसन्त श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का आगामी चातुर्मास उनके शिष्य-प्रशिष्यों के साथ श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र में होगा। भव्य चातुर्मास प्रवेश दि. २३-६-२०२० को सम्पन्न होगा। लगभग आठ वर्षों के बाद पूज्य राष्ट्रसन्तश्री का चातुर्मास कोबातीर्थ में होना निश्चित हुआ है। उनके साथ आचार्य श्री हेमचन्द्रसागरसूरिजी म.सा. गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी, मुनि श्री भुवनपद्मसागरजी तथा मुनि श्री पुनीतपद्मसागरजी भी उपस्थित रहेंगे। विश्वव्यापी कोरोना महामारी से सुरक्षा हेतु जारी की गई सरकारश्री की सूचनाओं का पालन करते हुए श्रद्धालु भक्तगण पूज्य राष्ट्रसन्तश्री की अमृतमयी वाणी का लाभ ले सकेंगे तथा मानवजीवन को सफल बना सकेंगे।

श्री महावीरालय में प्रभु श्री महावीरस्वामी का भव्य सूर्यतिलक

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २२ मई को दोपहर २ बजकर ०७ मिनट पर भगवान महावीरस्वामी के ललाट पर सूर्यकिरणों ने तिलक किया। विश्वव्यापी कोरोना महामारी की वजह से इस वर्ष एक भी व्यक्ति श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के परिसर में नहीं आ पाया था। परन्तु इस आह्लादक दृश्य का यूट्यूब के माध्यम से पहली बार Live प्रसारण किया गया था, जिसे समस्त विश्व के श्रद्धालुओं ने यूट्यूब पर देखा। अमेरिका, कनाडा, जापान आदि देशों के लगभग १० से १२ हजार श्रद्धालुओं ने यूट्यूब के ऊपर इस आह्लादक दृश्य को निहारकर स्वयं को कृतार्थ किया। इस रेकार्डिंग को अबतक देश-विदेश के लगभग ६५,००० से अधिक लोग देख चुके हैं।

राष्ट्रसंत श्री की पावन निश्रा में वर्षीतप का पारणा

श्री कोबा तीर्थ के प्रांगण में पूज्य राष्ट्रसंत श्री की पावन निश्रा में दि. २६-४-२०२० अक्षय तृतीया के दिन श्रुतसेवी प. पू. आचार्य श्री अजयसागरसूरि म. सा. के शिष्यरत्न पू. मुनि श्री ऋषिपद्मसागरजी म.सा. के वर्षीतप का पारणा करवाया गया। कोरोना महामारी के कारण सादगीपूर्ण रूप से प्रसंग का आयोजन किया गया।

For Private and Personal Use Only

२२ मई २०२० के दिन आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी म.सा. के अग्निसंस्कार समय दुपहर २ बजकर ७ मिनट पर कोबा तीर्थपति भगवान महावीरस्वामी के भालतिलक पर होने वाले देदीप्यमान सूर्यकिरण का मनोरम दृश्य

हस्तप्रत संरक्षण कार्य करते वक्त सफाई हेतु काम लगने वाले कतिपय उपकरण (विवरण हेतु पढें लेख “प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि”)

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

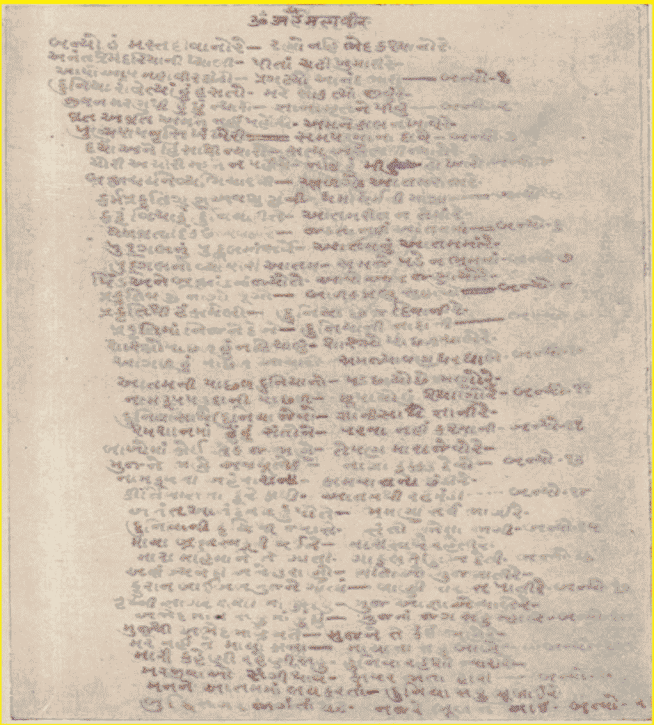
ॐ अर्हं महावीर

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के हस्ताक्षर

BOOK-POST / PRINTED MATTER
प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२००७
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382007, Gujarat.
And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382007, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only